आदि में, जब परमेश्वर ने अदन की वाटिका बनाई, तब उसने आदम और हव्वा को वहाँ रखा। पूरी अवधि के दौरान जब वे वहाँ थे, पवित्रशास्त्र बताता है कि वे दोनों नग्न थे, पर उन्हें अपनी नग्नता का कोई संकोच न था:

“और आदम और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे, परन्तु उन्हें लज्जा न आई।”
उत्पत्ति 2:25

लेकिन जब उन्होंने पाप किया और परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, तभी उनकी आँखें खुल गईं और उन्हें अपनी नग्नता का बोध हुआ:

“तब उन दोनों की आँखें खुल गईं, और उन्हें मालूम हुआ कि वे
नंगे हैं; और उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़कर अपनी कमर के
लिए लंगोट बनाए।”
उत्पत्ति 3:7

नग्नता की यह चेतना, उनकी “पवित्र आच्छादन” की हानि का प्रतीक है — अर्थात् पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य:

“और जब वह आएगा तो पाप, धर्म, और न्याय के विषय में जगत को दोष देगा।”
यूहन्ना 16:8

जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, तो उसने उसमें अपनी आत्मा फूंकी और उसे पवित्रता और निष्कलंकता में चलने की सामर्थ दी:

“और परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया; उसे परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया; नर और नारी करके उन्हें उत्पन्न किया।”
उत्पत्ति 1:27
“मुझे अपने सम्मुख से न निकाल, और अपनी पवित्र आत्मा को
मुझसे अलग न कर।”
भजन संहिता 51:11

लेकिन जैसे ही उन्होंने पाप किया, वह दिव्य आच्छादन उनसे हटा लिया गया — और उनकी कमजोरी और पाप प्रकट हो गए:

“परन्तु तुम्हारे अधर्मों ने तुम्हें अपने परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों ने उसका मुख तुमसे छिपा दिया है कि वह नहीं सुनता।”
यशायाह 59:2

उसके बाद, परमेश्वर ने उन्हें पशु की खाल से वस्त्र पहनाए:

“और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अंगरखे बनाए और उन्हें पहनाए।”
उत्पत्ति 3:21

यह पहला बलिदान था — मसीह के बलिदान की एक झलक — जिसकी रक्तमूल्य से हमारे पाप ढंके जाते हैं:

“और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती।”
इब्रानियों 9:22

तब से शैतान ने अपने ही एक “बाग़” की रचना शुरू कर दी — एक ऐसा स्थान जहाँ वह लोगों को धीरे-धीरे परमेश्वर की आत्मा की

आच्छादन से वंचित करके आत्मिक नग्नता और लज्जा में ले जाता है:

“और यह कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। इसलिये यह कोई बड़ी बात
नहीं, कि उसके सेवक भी धार्मिकता के सेवकों का रूप धारण करें।”
2 कुरिन्थियों 11:14-15

लगभग छह हज़ार वर्ष बीत चुके हैं, और शैतान का यह बाग़ आज और भी सुदृढ़ हो गया है। वह मनुष्यों की आँखों पर अपवित्र आवरण डाल रहा है जिससे वे अपनी आत्मिक नग्नता और पाप को न देख सकें:

“उन अविश्वासियों की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अंधा
कर दिया है, ताकि वे मसीह की महिमा के सुसमाचार का प्रकाश न
देख सकें, जो परमेश्वर का स्वरूप है।”
2 कुरिन्थियों 4:4

यह आत्मिक अंधापन बहुत खतरनाक है क्योंकि यह लोगों को पश्चाताप और उद्धार की आवश्यकता से अनजान रखता है:

“उस समय तुम भी अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे,
जिन में तुम पहले इस संसार की रीति पर चलते थे।”
इफिसियों 2:1-2

पूर्वकाल में नैतिकता के मापदंड अधिक स्पष्ट थे। एक समय था जब सार्वजनिक रूप से स्त्रियों द्वारा पैंट पहनना अपवित्र माना जाता था। पर आज ऐसी वेशभूषा चर्चों में भी सामान्य हो गई है:

“इस कारण परमेश्वर ने उन्हें लज्जाजनक अभिलाषाओं के अधीन
कर दिया … पुरुषों ने पुरुषों के साथ लज्जा का काम किया।” रोमियों 1:26-27

आज पुरुष भी खुलकर अपने शरीर को दिखाते हैं — यह केवल शारीरिक नहीं, आत्मिक नग्नता का प्रतीक है:

“क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा है … इसलिये तुम अपने शरीर से परमेश्वर की महिमा करो।”

1 कुरिन्थियों 6:19-20

यह केवल बाहरी नहीं, बल्कि यह दर्शाता है कि परमेश्वर की आत्मा की उपस्थिति नहीं रही:

“जिसे मैं प्रेम करता हूँ, उसे मैं डाँटता और ताड़ना देता
हूँ। अत: तू मन फिरा और सचेत हो जा।”
प्रकाशितवाक्य 3:19

शैतान का यह “बाग़” आत्मा में आरंभ होता है। प्राचीन कलीसिया जो प्रेरितों द्वारा स्थापित हुई थी, पवित्र आत्मा की सामर्थ से भरपूर थी:

“जब पेंटकोस्ट का दिन आया, वे सब एक जगह इकट्ठे थे … और वे
सब पवित्र आत्मा से भर गए।”
प्रेरितों के काम 2:1-4
“जिसके पास मसीह का आत्मा नहीं, वह उसका नहीं।”
रोमियों 8:9

परंतु आज की कलीसिया — जो “लौदिकिया की कलीसिया” कहलाती है — उस आत्मिक आच्छादन से रहित है। इसके स्थान पर एक नकली आत्मा ने प्रवेश किया है जो धोखा, ठंडापन और अधीरता फैलाता है:

“लौदिकिया की कलीसिया के दूत को लिख: यह कहता है वह ‘आमीन’, विश्वासयोग्य और सच्चा साक्षी …”
प्रकाशितवाक्य 3:14-22

“मैं तेरे कामों को जानता हूँ, कि तू न ठण्डा है और न गरम …
तू कहता है, कि मैं धनी हूँ, और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं
… और तू यह नहीं जानता, कि तू अभागा, और तुच्छ, और कंगाल, और अंधा, और नंगा है।”
प्रकाशितवाक्य 3:15-17

आज हम देखते हैं कि कलीसिया में कई विश्वासी बिना किसी आत्मिक दोषबोध के पाप में जी रहे हैं — स्त्रियाँ अधनंगी होकर सभा में आती हैं; पुरुष व्यभिचार में पड़े हैं; शराबी अपने को मसीही कहते हैं; मूर्तिपूजक पश्चाताप नहीं करते:

“तू अपने लिये कोई मूर्ति न बनाना, और न किसी वस्तु की आकृति बनाना … तू उन्हें न दण्डवत करना और न उनकी उपासना करना।” निर्गमन 20:4-5

परमेश्वर इस कलीसिया से कहता है:

“मैं तुझे सम्मति देता हूँ, कि तू मुझ से आग में तपा हुआ सोना मोल ले … और श्वेत वस्त्र ले, कि तू पहन सके … और अपनी आंखों में लगाने के लिये सुरमा ले, कि तू देख सके।”
प्रकाशितवाक्य 3:18
“देख, मैं द्वार पर खड़ा होकर खटखटाता हूँ … यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोले, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा।”
प्रकाशितवाक्य 3:20

पवित्र आत्मा के बिना न सच्चा उद्धार है और न सच्चा परिवर्तन:

“यदि कोई जल और आत्मा से जन्म न ले, तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।”

यूहन्ना 3:5

जो उसे अस्वीकार करते हैं, वे आत्मिक दृष्टि से अंधे और नग्न ही रहेंगे:

“मुझे भय है कि जैसे साँप ने हव्वा को छल से बहकाया, वैसे ही तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट न हो जाए।”
2 कुरिन्थियों 11:3

हम बहुत ही संकटपूर्ण समय में जी रहे हैं:

“पर यह जान रख, कि अन्त के दिनों में कठिन समय आएंगे।”
2 तीमुथियुस 3:1

इसलिए अभी मन फिराओ! और पवित्र आत्मा को प्राप्त करो — वही परमेश्वर की मुहर है और उद्धार का स्त्रोत:

“जिस पर तुम्हें पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा के साथ छापा गया है, जो हमारी मीरास का बयाना है।”
इफिसियों 1:13-14

यीशु का अनुसरण पूरी निष्ठा से करो:

“यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे, और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले।”
मत्ती 16:24

और शैतान का विरोध करो:

“सचेत हो जाओ, जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा शत्रु शैतान
गरजते हुए सिंह के समान ढूँढता फिरता है कि किसे निगल जाए।”
1 पतरस 5:8

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp